1

प्रकाशितवाक्य मेरी प्रिय पुस्तक है!

मुझे मालूम था कि मैं मुश्किल में हूं। एक रविवार प्रात:, कलीसिया में यह घोषणा हुई थी कि अगले सप्ताह बुधवार शाम से मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन आर भ करने वाला हूं। आराधना के बाद, मेरी एक प्रिय छात्रा मेरे पास आई। उसने नाक चिढ़ाते हुए कहा, ''मैं परवाह नहीं करती!''

मेरी मित्र अकेली नहीं है। बहुत से लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ''की परवाह नहीं करते।'' जब मैं लड़का था, तो वयस्कों को बाइबल सिखाने वाले लोग आम तौर पर पूरा नया नियम एक-एक आयत को सिखाते हुए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक आते थे। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 3 को समझने की कोशिश करने के बाद, उनमें से अधिकतर लोग यहां से छोड़कर फिर मत्ती के पहले अध्याय से आर भ कर देते थे। इस तथ्य के बावजूद कि बाइबल में केवल यही पुस्तक है, जिसमें पढ़ने और अध्ययन करने वाले के लिए आशीष देने की बात कही गई है (1:3)। फ्रैंक पैक मानते थे कि प्रकाशितवाक्य ''नये नियम की पुस्तकों में सबसे कम पढ़ी जाने वाली पुस्तक हो सकती है।''[1]

क्यों दूसरों को प्रकाशितवाक्य पसन्द नहीं-जबकि मुझे है

मसीही लोगों में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के प्रिय न होने के कई कारण हो सकते हैं।

(1) लोगों को इसकी समझ नहीं आती। नये नियम की दूसरी किताबों के विपरीत, इसकी ज्यादातर शिक्षाएं साधारण पाठकों के लिए उपयोगी नहीं लगतीं।[2] इसके अलावा, इसमें अपरिचित शब्दों तथा आकृतियों की भरमार है। हमें मानना ही पड़ेगा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक एक *अद्‌भुत* किताब है।

(2) कुछ लोग इससे पीछे हट जाते हैं। सनसनी फैलाने वालों के लिए यह पुस्तक खेल का मैदान और असंतुष्ट तथा विक्षिप्त लोगों के लिए युद्ध की योजना बन चुकी है। टीवी प्रचारक बिना किसी झिझक के घोषणा करते हैं कि इसकी भविष्यवाणियां किस प्रकार ताज़ा समाचारों के बारे में ही हैं। अनियमित धार्मिक अगुवे प्रकाशितवाक्य से वचन निकाल लेते हैं और इसकी युद्धकारी आयतें युद्ध के लिए उनकी पुकार बन जाती हैं। कई लोग इन तीन अतियों के कारण पीछे हट जाते हैं।

(3) बहुत से लोग इससे भय खाते हैं। क्या सुलैमान के मन में प्रकाशितवाक्य के

टीका थे, जब उसने लिखा, ''... बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता'' (स ोपदेशक 12:12) ? व्या याओं की बहुतायत के कारण पाठक यह मानने लगे हैं कि ''प्रकाशितवाक्य पर आप जो भी कहना चाहें, कह सकते हैं'' और मु यतया इसके संदेश को समझना अस भव है।

हर व्यक्ति इस पुस्तक को पसन्द नहीं करता, पर मैं करता हूं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बाइबल के मेरे पसंदीदा भागों में से एक है।

जब मैं बच्चा था, तो यह मेरी कल्पना के साथ बात करती थी। तेरह-चौदह साल की उम्र में मैंने ग्रीष्मकाल के बाइबल कैंप में भाग लिया। कैंप में भाग लेने वालों के लिए प्रति दिन व्यक्तिगत उपासना करना आवश्यक था। सब को एकांत जगह ढूंढ़ने के लिए कहा गया, जहां वे बाइबल पढ़ सकें, प्रार्थना कर सकें या परमेश्वर के वचन तथा संसार पर मनन कर सकें। मैंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कभी नहीं पढ़ी थी, इसलिए मैंने निर्णय लिया कि उस सप्ताह मैं इसे पढ़ूंगा। मैंने पाया कि मुझे यह किताब अच्छी लगती है! मुझे नहीं मालूम था कि इसका क्या अर्थ है, पर मुझे यह अच्छी लगी! स्पष्ट उपमा ने मुझे चौंका दिया था। अपने मन में, मैं स्पष्ट रंगों, अद्‌भुत आकारों तथा उन्मत्त भावना के आत्मिक बहुरूप को देख पाया।

जवानी में इस पुस्तक ने मेरे दिमाग के साथ बात की। अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी (उस समय कॉलेज) में पढ़ते हुए, मेरा एक पसंदीदा कोर्स फ्रैंक पैक की अगुआई में ''प्रकाशितवाक्य'' था। मैंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की रिकॉर्डिंग की और इसके अध्यायों को सुनता रहा और अन्त में यह एक पगडण्डी बनकर मेरा जाना पहचाना रास्ता बन गया। भाई पैक की अगुआई में, मैंने देखा कि यह किताब मेरे लिए खुली है। मुझे इसके वाक्यांशों की जटिलता को सुलझाना अच्छा लगता था। (पहेलियों वाले शब्द मुझे हमेशा अच्छे लगते हैं।[3])

पिछले चालीस वर्षों में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ने मेरे मन और प्राण से बात की है। मैंने इस पुस्तक का अध्ययन बन्द नहीं किया है और जहां भी गया हूं, उस मण्डली में मैंने इसे पढ़ाया है। मैंने सिडनी और ऑस्ट्रेलिया के मैकुयेरी स्कूल ऑफ़ प्रीचिंग में भी आठ साल इसे पढ़ाया। मैं संसार में तथा अपने अन्दर पाई जाने वाली भलाई और बुराई में लड़ाई को समझने लगा हूं। प्रकाशितवाक्य के संदेश से बढ़कर कुछ विचार मुझे उत्तेजित कर रहे हैं: *यदि हम परमेश्वर के साथ रहें, तो विजय निश्चित है!* मुझे इसी संदेश की आवश्यकता है! आपको भी होगी।

मैं क्या पा सकता हूं और क्या नहीं

जो कुछ भाई पैक ने मेरे लिए किया, वही मैं आपके लिए करना चाहता हूं, यानी मैं आपको प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की रोमांचकारी यात्रा पर ले जाना चाहता हूं। मैं आपको इस पुस्तक को समझने का तर्कसंगत, संवेदनशील ढंग दिखाना चाहूंगा, जो इसे समझने के योग्य तथा अध्ययन करने के लिए आनन्ददायक बना सकता है। अबिलेन क्रिश्चियन

कॉलेज से स्नातक करने के बाद मैंने ग्रेटर ओक्लाहोमा क्षेत्र में विलेज चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में प्रकाशितवाक्य पर पढ़ाया। एक दिन मुझे डाक से एक पत्र मिला। इसकी कुछ बातें इस प्रकार हैं:

> इस टिप्पणी का उद्देश्य आपको यह बताना है कि प्रकाशितवाक्य पर रविवार प्रात: के बाइबल स्कूल के पाठों में मैं *कितना* आनन्दित हूं। मुझे याद नहीं कि अध्ययन की किसी शृंखला में इससे पहले मैं इतना आनन्दित हुआ हूं। ... मैंने पहले दो-तीन बार प्रकाशितवाक्य का अध्ययन किया है, पर सच कहता हूं कि मुझे इसकी पूरी समझ अभी पहली बार आने लगी है। आपने इस पुस्तक के अध्ययन का इतना व्यावहारिक और (बहुत ही आवश्यक) विश्वसनीय ढंग अपनाया है कि प्रकाशितवाक्य के अब अपनी पसन्द होने के लिए मैं इससे भी बढ़-चढ़कर असामान्य बातें लिख सकता हूं।[4]

इस अध्ययन के पूरा होने के बाद, यदि आप सच्चे दिल से कह सकें कि आपको ''अब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अच्छी लगने लगी है'' तो मुझे प्रसन्नता होगी। यदि आप इतना संतुष्ट हों कि आशा के इसके संदेश को दूसरों को भी बता सकें, तो मेरा कटोरा छलक रहा होगा।

मैं आपको सावधान कर दूं कि पुस्तक की हर बात पर आपकी जिज्ञासा को मैं संतुष्ट नहीं कर पाऊंगा। मेरा मानना है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्ययन का कुछ ''आनन्द'' यह निष्कर्ष निकालने की कोशिश करना है कि पवित्र आत्मा ने इस रूपक का इस्तेमाल *क्यों* किया, सो मैं वही बताऊंगा, जो प्रतीकों के महत्व के बारे में मेरा *विचार* है। आप हर बात पर मेरे निष्कर्षों से सहमत होते हैं या नहीं, इसका इतना महत्व नहीं है। पुस्तक का संदेश ''बाल की खाल'' के महत्व में नहीं, बल्कि लिखे गए दर्शनों के कुल प्रभाव में है। जैसे भाई पैक ने कहा है, ''यदि आपको सभी बातें समझ में न भी आएं तौ भी बड़े महत्वपूर्ण सबक समझे जा सकते हैं।''[5]

प्रकाशितवाक्य के लेखन के स बन्ध में, हम केवल दो क्षेत्रों में हठधर्मी हो सकते हैं: (1) यदि लेख में स्वयं किसी प्रतीक की सरल और स्पष्ट व्या या हो, तो हम उस व्या या के बारे में हठधर्मी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु ने कहा कि ''[1:12 वाले] सात दीवट सात कलीसियाएं हैं'' (1:20), इसलिए किसी को भी यह कहने का अधिकार नहीं है कि 1:12 वाले सात दीवटों के प्रतीक का अर्थ कुछ और है। (2) यदि कोई प्रकाशितवाक्य के किसी वचन की व्या या इस तरह करता है कि वह बाइबल की किसी और स्पष्ट शिक्षा के विपरीत हो, तो हम उसे हठधर्मिता तथा बलपूर्वक कह सकते हैं (और कहेंगे) कि ''यह व्या या गलत है!'' इसके अलावा, हमें मसीही उदारता का इस्तेमाल करना आवश्यक है। ''जिसका कोई अपना पसंदीदा अनुमान न हो, वही पहला पत्थर मारे!''[6]

सारांश

आशा है कि मैंने आप में दिलचस्पी पैदा कर दी है। यह तो आवश्यक नहीं कि स्वर्ग में जाने के लिए आपको प्रकाशितवाक्य को जानना और समझना आवश्यक है, पर मैं आपसे यह वायदा कर सकता हूं कि यदि आप इस पुस्तक को नज़रअंदाज करें तो ...

... आप यीशु द्वारा प्रतिज्ञा की हुई आशिषों से वंचित रहेंगे (1:3)।

... आप यीशु के बारे में और जानने का अवसर खो देंगे (वह इस पुस्तक के हर भाग का केन्द्र है।)

... आपको बाइबल के चरम का पता नहीं चल पाएगा। (पहली पैंसठ पुस्तकें इसी तक लाती हैं।)

... आप उस निर्देश को नहीं जान पाएंगे, जो जीवन को उपयोगी बनाने में आपकी सहायता कर सकता है। (हो सकता है कि इसके विपरीत लगे, परन्तु नियन्त्रण अभी भी परमेश्वर के हाथ में है।)

... आप उस प्रोत्साहन से वंचित रहेंगे, जो आपको कठिन समयों में स्थिर रहने के लिए सहायता कर सकता है। (परमेश्वर सब कुछ सही कर देगा।)

... आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के स बन्ध में आज पाए जाने वाले अनियमित अनुमान की दलदल में फंसे लोगों की सहायता नहीं कर पाएंगे।

... आप अपने आप को उस अनुमान के सहारे छोड़ देंगे, जो कलीसिया को तोड़ सकता है, जिसने मसीही लोगों को विश्वास से गिराया है।

बुधवार रात की बाइबल क्लास में सिखाते हुए, मेरे सामने एक चुनौती अपनी मित्र के मन में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए सराहना उत्पन्न करने की थी, जिसने कहा था कि ''मैं परवाह नहीं करती।'' फिर, इन लिखित पाठों को तैयार करते हुए, मेरे सामने एक चुनौती इस पुस्तक के प्रति *आपके* मन में प्रेम बढ़ाना था। अरल पाल्मर ने कहा है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक न केवल ''समझने में कठिन है, बल्कि लिखने में भी कठिन है।''[7] अध्ययन करने से पहले, मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूं कि आप इस बात को मान लें।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस शृंखला के अधिकतर पाठों के अन्त में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में से सिखाने तथा प्रचार करने में आपकी सहायता के लिए मैं कुछ नोट्स दिया करूंगा।

''कब तक, हे प्रभु?'' पाठ में, मैंने कुछ ऐसा ही करने की कोशिश की है, जो पहले नहीं की गई: *व्या यात्मक प्रवचनों* की शृंखला देना, जिसमें पूरी तरह से पुस्तक का लेख शामिल किया गया। पाठों में मैं, टिप्पणियों में या अतिरिक्त लेखों में बाइबल के वचनों के साथ पर्याप्त रूप से समझाने की कोशिश करूंगा, परन्तु मेरा उद्देश्य प्रकाशितवाक्य पर हज़ारों टीकाओं में एक और टीका जोड़ना नहीं है। मेरा उद्देश्य इस पुस्तक में से *प्रचार करने* की स भावना को दिखाना है।

मेरी योजना इस पुस्तक की आज के लिए *प्रासंगिकता* की ओर विशेष ध्यान दिलाना है। जे स स्ट्राउस ने प्रकाशितवाक्य से व्या यात्मक प्रवचन पर टीका करते हुए लिखा है, ''किसी प्रासंगिकता पर और कील लगाने की कोई आवश्यकता नहीं थी, इसकी प्रासंगिकता तो पहले से रही है। यह तो जैसे इसी में बुनी गई है।''[8] मेरी चुनौती आपको आज की चुनौतियों के लिए प्रासंगिकता दिखाने में होगी, वह प्रासंगिकता (श्री स्ट्राउस के शब्दों का इस्तेमाल करें) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ''के ही वस्त्र में बुनी गई है।''

इन पाठों का इस्तेमाल क्लास के रूप में सिखाने के लिए किया जा सकता है; आपके छात्रों के लिए इन वचनों को लागू करने में सहायता के लिए उपदेश देने का ढंग सहायक होना चाहिए। उ मीद है कि बहुत से लोग इन पाठों को प्रवचनों के रूप में इस्तेमाल करना चाहेंगे। कुछ लोग सभी प्रवचनों का इस्तेमाल करने की इच्छा कर सकते हैं; दूसरे केवल चुने हुए पाठों का इस्तेमाल करना चाहेंगे; परन्तु इनका इस्तेमाल अवश्य करें।

इस शृंखला की विशेष बात यह है कि बाइबल के विशेष उदाहरण एक अच्छे कलाकार, ब्रायन वाट्स ने तैयार किए हैं। मैंने इन उदाहरणों पर काम करते हुए ब्रायन के साथ कई सप्ताह तक कार्य किया है। अपने पाठों या प्रवचनों को विस्तार देने के लिए इन्हें बड़ा कर लें। कागज़ में जगह की कमी के कारण हमने इनमें से कुछ ही उदाहरणों को शामिल किया है।

परन्तु जिन बातों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, आइए पहले उन्हें प्राथमिकता दें अर्थात पहले प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को एक पूर्ण और इसकी सामग्री से संतुष्ट होने के रूप में समझाएं। अध्ययन करने के लिए मैं कुछ व्या याएं देता हूं, जिनसे आप को इस सामग्री का व्यक्तिगत अध्ययन करने में सहायता मिलेगी।

प्रकाशितवाक्य के अधिकतर हवालों जैसे ''(1:2)'' के साथ ''प्रकाशितवाक्य'' शब्द नहीं होगा। इसलिए यदि आपको संदर्भ में दिया गया बाइबल की पुस्तक का नाम लिखे बिना कोई हवाला मिलता है, तो समझ लें कि वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ही है।

अपने लिए मैं न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल (NASB) का इस्तेमाल करूंगा, परन्तु जहां किंग जे स वर्ज़न (KJV) में बहुत अन्तर हो, वहां इसका इस्तेमाल भी होगा। बीच-बीच में मैं ए पलीफाइड बाइबल (AB), अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्ज़न (ASV), कंटै परेरी इंग्लिश वर्ज़न (CEV), न्यू सैंचुरी वर्ज़न (NCV), न्यू इंग्लिश बाइबल (NEB), न्यू इंटरनेशनल वर्ज़न (NIV), न्यू किंग जे स वर्ज़न (NKJV), न्यू रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न (NRSV), रिवाइज़्ड इंग्लिश बाइबल (REB), रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न (RSV) और सि पल इंग्लिश बाइबल (SEB) का इस्तेमाल करूंगा। किसी और संस्करण का इस्तेमाल करने पर उसका नाम दिया जाएगा। हो सकता है कि मैं कभी-कभी लिविंग बाइबल (LB) या न्यू लिविंग ट्रांसलेशन (NLT) का उल्लेख भी करूं, पर याद रखें कि ये केवल व्या याएं हैं, न कि अनुवाद।

कहीं-कहीं मैं टिप्पणियों, सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स में अतिरिक्त स्रोतों का उल्लेख करता हूं। आप में से कइयों की पहुंच में वे पुस्तकें नहीं होंगी, फिर भी

मैंने उनका उल्लेख उन लोगों के लाभ के लिए किया है, जो उन्हें ढूंढ़कर पढ़ सकते हैं। ये अतिरिक्त पुस्तकें इन पाठों को समझने के लिए आपके लिए आवश्यक नहीं हैं; इसलिए यदि वे न मिलें तो चिंता न करें। (मुझे यकीन है कि आप इस बात को समझते हैं कि न तो मैं और न ही *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* कार्यालय आपको ये पुस्तकें उपलब्ध करा सकता है।)

मैं उन सभी का, जिन्होंने उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध कराई हैं, आभार व्यक्त करना चाहता हूं। कई लोगों ने प्रकाशितवाक्य पर अपने कीमती टीका मुझे दिए हैं; हार्डिंग यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय की ओर से अनुग्रहपूर्वक मुझे पुरानी पुस्तकें दी गई हैं, जो अब प्रकाशन में नहीं हैं; हार्डिंग यूनिवर्सिटी के बुक स्टोर तथा अन्य पुस्तक विक्रेताओं ने दुर्लभ पुस्तकें ढूंढ़ने में मेरी सहायता की है। सबसे बड़ा योगदान जैक डब्ल्यू. हॉल का रहा, जिन्होंने अपनी पूरी लाइब्रेरी ही ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल को दान कर दी, जिसमें प्रकाशितवाक्य तथा इस पुस्तक पर उनके गहन अध्ययन के नोट्स के साथ एक सौ से अधिक पुस्तकें शामिल हैं। भाई हॉल प्रकाशितवाक्य पर पुस्तक लिखने का अपना सपना पूरा नहीं कर पाए, पर उनकी विद्वता से इस शृंखला में बड़ी आशीष मिली है और दूसरों के लेखों में वर्षों तक इसका प्रभाव रहेगा, जो ट्रुथ फ़ॉर टुडे की लाइब्रेरी में से पुस्तकें पढ़ सकते हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्ययन में परमेश्वर आपको आशीष दे और इस अध्ययन के परिणाम दूसरों को बताने में वह आपको और भी आशीष दे!

डेविड रोपर

टिप्पणियां

[1]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 5. [2]मैं यह सुझाव नहीं दे रहा कि नये नियम की अन्य सभी शिक्षाएं आसानी से समझ आ जाती हैं, परन्तु प्रकाशितवाक्य के बजाय अन्य अधिकतर पुस्तकों के मु य संदेश स्पष्ट, सरल भाषा में मिलते हैं। [3]मैं यह सुझाव नहीं दे रहा कि प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करने का सबसे अच्छा कारण ''गुप्त कोर्ड का पता लगाना'' है। मैं तो केवल वह रास्ता बता रहा हूं, जिससे होकर आने से मुझे यह समझ मिली है। [4]जेन हार्ट, ओक्लाहोमा सिटी, टू डेविड रोपर, ओक्लाहोमा सिटी, 28 जुलाई 1960. [5]पैक, 4. [6]सी. एफ़. विशर्ट, *द बुक ऑफ़ डे* (न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड प्रैस, 1935), vii. [7]अरल एफ़. पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द क युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 93. [8]जे स स्ट्राउस, *द सीयर, द सेवियर एण्ड द सेवड,* संशो. संस्क., बाइबल स्टडी टैक्स्ट बुक सीरीज़ (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1979), 379.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. कुछ लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन करने से हिचकिचाते क्यों हैं ? क्या *आप* हिचकिचाते हैं ? यदि हां, तो क्यों ?
2. ऐसी कौन सी अनियमित और अस भव शिक्षाएं *आपने* सुनी हैं, जिन्हें लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखे होने का दावा करते हैं ?
3. किन तीन ढंगों से इस पाठ के लेखक ने कहा कि यह पुस्तक उसकी बात करती है ?
4. क्या आशीष पाने के लिए इसकी *हर बात* को समझना आवश्यक है ? दूसरी ओर, क्या आशीष पाने के लिए पुस्तक की *कुछ* बातों को समझना आवश्यक है ?
5. एक-दूसरे के साथ सहभागिता बनाए रखने के लिए क्या प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की *हर बात* को समझना हमारे लिए आवश्यक है ?
6. पुस्तक के बारे में किन दो बातों में हम हठधर्मी हो सकते हैं ?
7. पुस्तक के अध्ययन के कुछ कारण बताएं। इस अध्ययन से *आप* को क्या उ मीद है ?